बुन्देलखण्ड के परमार

(राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं क्रान्तिकारी इतिहास)

डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

Scanned with OKEN Scanner

बुन्देलखण्ड के परमार : डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला

Bundelkhand ke Parmar : Dr. Ramswaroop Dhengula

© मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

■ प्रादेशिक भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तरीय ग्रन्थों और साहित्य के निर्माण के लिये भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा) की केन्द्र प्रवर्तित योजनान्तर्गत भारत सरकार के द्वारा रियायती दर पर उपलब्ध कराये गये कागज एवं मध्यप्रदेश शासन की ओर से प्राप्त अनुदान की मदद से रियायती मूल्य पर मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल द्वारा प्रकाशित।

प्रकाशक : मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,
रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग,
भोपाल (म.प्र.) 462003,
दूरभाष : (0755)2553084 दूरलेख : अकादमी

संस्करण : प्रथम 2010

मूल्य : ₹ 180.00 (एक सौ अस्सी) मात्र

कंपोजिंग : अनुपा ग्राफिक्स, भोपाल (म.प्र.)

मुद्रक : श्री श्रद्धा आफसेट प्रिन्टर्स भोपाल, फोन – 0755-2550248

Scanned with OKEN Scanner

विषय-सूची

आवरण चित्र : औरीना के कुँअर मानधाता परमार से प्राप्त पाण्डुलिपि में दिया गया नायिका का चित्र

दो-शब्द viii-ix

सदंर्भ-ग्रंथ संकेत परिचय x-xi

अध्याय-एक

बुन्देलखण्ड में परमार ठाकुरों की सत्ता का उद्‌गम 1-10

1. बुन्देलखण्ड की सीमाएँ। 1-2
2. परमारों की उत्पत्ति और मालवा के परमार। 2-5
3. मालवा के परमारों का बुन्देलखण्ड से संपर्क। 5-6
4. मालवा के परमारों के बुन्देलखण्ड की ओर झुकाव के कारण। 6-8
5. महुअर तलहटी की राजनैतिक स्थिति। 8-9
6. संदर्भ-ग्रंथ। 9-10

अध्याय-दो

बुन्देलखण्ड का पहला परमार शासक और उसका समय 11-30

1. पुन्यपाल परमार और बुन्देलखण्ड। 11-13
2. पुन्यपाल परमार और मालवा की धार शाखा। 13-17
3. पुन्यपाल परमार का सहयोग ओर गढ़कुंढ़ार पर अधिकार। 17-20
4. परमार बुन्देलाओं के संबंधों की शुरुआत। 20-22
5. पुन्यपाल परमार और पवाया। 22-28
6. संदर्भ ग्रंथ। 28-30

अध्याय-तीन

पुन्यपाल परमार के बाद बुन्देलखण्ड में परमार सत्ता के प्रमुख ठिकाने 31-50

1. पुन्यपाल परमार के पुत्र और उनके ठिकाने 31-33
2. बेरछा के परमार 33-43
3. रतनगढ़ और देवगढ़ के परमार 43-49

4.	संदर्भ-ग्रंथ	49-50
अध्याय-चार		
	करैरा और अंचल के परमार	51-72
1.	करैरा में परमार सत्ता का उत्थान	51-58
2.	करैरा अंचल के जागीरदार	58-64
3.	घाटी मयापुर, केरुआ, करइया और बिल्हारी के परमार	64-71
4.	संदर्भ-ग्रंथ	71-72
अध्याय-पाँच		
	छतरपुर का परमार राज्य	73-109
1.	छतरपुर में परमार राज्य की स्थापना एवं प्रथम शासक	73-81
2.	छतरपुर के अन्य परमार शासक	81-86
3.	छतरपुर के अंतिम दो परमार शासक	86-95
4.	छतरपुर राज्य में स्वतंत्रता आंदोलन	95-106
5.	संदर्भ-ग्रंथ	107-109
अध्याय-छह		
	बैरी का परमार राज्य।	**110-114**
1.	बैरी कस्बे की स्थिति और परमार राज्य की स्थापना	110
2.	बैरी के शासक	110-113
3.	संदर्भ-ग्रंथ	113-114
अध्याय-सात		
	शेष परमार जागीरदार-सामंत एवं क्रांतिकारी परमार	**115-192**
1.	अगोरा के राघोदास परमार	115-119
2.	सुगरा के परमार नौने अर्जुनसिंह	119-129
3.	केरुआ के हीरासिंह परमार	129-133
4.	छतरपुर की रानी झड़कुँअरि परमार	133-135
5.	अमीटा-बिलाया के बरजोर सिंह परमार	135-146
6.	दिनारा-करैरा अंचल के क्रांतिकारी परमार	146-159
7.	दतिया के अंचल के परमार	159-169

Scanned with OKEN Scanner

8.	उगोरा के परमार	169–174
9.	औरीना के परमार	174–183
10.	आलमपुर के परमार	183–185
11.	दतिया नगर के परमार	185–187
12.	संदर्भ-ग्रंथ	187–192
अध्याय-आठ		
	परमारों के अंतर्गत प्रशासन, भू-राजस्व व्यवस्था, कृषक, सिंचाई एवं ग्राम्य व्यवस्था	193–258
1.	परमारों का मध्यकालीन प्रशासन	193–204
2.	छतरपुर के परमार राज्य का प्रशासन	205–215
3.	भू-राजस्व एवं आय के अन्य स्रोत	215–241
4.	सिंचाई के साधन	241–242
5.	कृषक और ग्राम्य-व्यवस्था	242–254
6.	संदर्भ-ग्रंथ	255–258
अध्याय-नौ		
	बुन्देलखण्ड के परमारों का सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास	259–384
1.	विविध ललित कलाएँ	259–294
2.	साहित्य और साहित्यकार	295–316
3.	लोकप्रवृतियों का लेखा	316–347
4.	सामाजिक-इतिहास	347–369
5.	आर्थिक-इतिहास	369–377
6.	संदर्भ-ग्रंथ	377–384
अध्याय-दस		
	परिशिष्ट एवं नक्शा	385–406
1.	इस ग्रंथ में प्रयुक्त नवीन सामग्री	385–394
2.	बुन्देलखण्ड में परमार ठकुरांस के प्रमुख स्थानों का नक्शा	395
3.	पन्द्रहवीं सदी का भारत	396
4.	संदर्भ-ग्रंथ-1 सूची	

संदर्भ ग्रन्थ संकेत परिचय

	ग्रंथ का नाम	संकेत
1.	बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास, गोरेलाल कृत	गोरेलाल
2.	चंदेल और उनका राजत्वकाल	केशवचंद्र
3.	बुन्देलखण्ड दर्शन	मोतीलाल
4.	सनके वर सुरभि	सनकेश्वर
5.	युगयुगीन ग्वालियर	युगयुगीन ग्वा.
6.	युगयुगीन मध्यप्रदेश	युगयुगीन म.प्र.
7.	परमार राजवंश का इतिहास	गांगुली
8.	भोजराज	भोजराज
9.	मालवा के परमार शासकों की राजस्व व्यवस्था	मालवा
10.	मध्यप्रदेश के पुरातत्व का संदर्भ ग्रंथ	पुरातत्व
11.	बुन्देलखण्ड का वृहद् इतिहास	त्रिपाठी
12.	बुन्देलखण्ड गजेटियर	बुन्दे. गजे.
13.	ग्वालियर गजेटियर	ग्वा. गजे.
14.	मुगलों के अंतर्गत बुन्देलखण्ड का सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास	डॉ. गुप्ता
15.	ग्वालियर के तोमर	ग्वा. के तोमर
16.	विदिशा गजेटियर	विदिशा गजे.
17.	दी आइन-ए-अकबरी (अँग्रेजी)	आईन
18.	करैरा के मुगलकालीन फौजदार	करैरा
19.	पद्मावती	पवाया
20.	बुन्देलखण्ड का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन	अनुशीलन
21.	क्षत्रिय खंगार जाति का इतिहास	खंगार
22.	दलपति राव रायसा	दलपति
23.	करहिया को रायसौ	करहिया
24.	शत्रुजीत रायसा	शत्रुजीत
25.	पारीछत रायसा	पारीछत

ग्रंथ का नाम	संकेत
26. कुलियात-ए-ग्वालियरी	कुलियात
27. विन्ध्यक्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल	ऐति. भूगोल
28. झाँसी गजेटियर	झाँसी गजे.
29. माआसिल उमरा	उमरा
30. रियासत ग्वालियर तारीख जागीरगदारान मय कवायद	जागीरदारान
31. अकबरनामा (हिन्दी, मथुरालाल का अनुवाद)	अकबरनामा
32. शाहजहाँनामा	शाहजहाँनामा
33. महाराज छत्रसाल बुन्देला	छत्रसाल
34. बुन्देलखण्ड का इतिहास (प्रतिपालसिंह)	दीवान
35. होल्कर राजवंश और आलमपुर	होल्कर
36. भूगोल राज्य दतिया	भूगोल
37. दतिया उद्भव और विकास	उद्भव
38. मधुकर, पाक्षिक पत्रिका	मधुकर
39. बुन्देली बसन्त (छतरपुर, प्रतिवर्ष)	बसन्त
40. ए हिस्ट्री ऑफ दी राइज एन्ड फाल आफ दी मराठाज् इन बुन्देलखण्ड	मराठाज्
41. बुन्देलखण्ड की छन्दवद्ध काव्य परम्परा	काव्य परम्परा
42. बुन्देलखण्ड की लोकसंस्कृति का इतिहास	बुन्दे. लोक.
43. राष्ट्रगौरव	राष्ट्रगौरव
44. मध्यकालीन नरवर	नरवर
45. शिवपुरी गजेटियर	शिव. गजे.
46. 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और जनपद जालौन	समर जालौन
47. मुगल साम्राज्य का केन्द्रीय ढांचा	इब्ने हसन
48. मस्तानी बाजीराव और उनके वंशज बांदा के नबाब	बाँदा के नबाब
49. तबारीखे बुन्देलखण्ड (उर्दू)	तबा. बुन्दे.
50. मध्यप्रदेश के रणबाँकुरे	रणबाँकुरे
51. बुन्देलखण्ड के दुर्ग	बुन्दे. दुर्ग
52. विन्ध्यप्रदेश के राज्यों में स्वतंत्रता संग्राम	विन्ध्य में संग्राम
53. लक्ष्मीबाई रासो	लक्ष्मीबाई रासो
54. ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास	ब्रज इति.

लेखक परिचय

डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला का जन्म, दतिया म.प्र. में 25, अक्टूबर सन् 1950 को कुंजनपुरा निवासी श्री हितकिशोर ढेंगुला के घर हुआ था। आपके पूर्वज झाँसी जिले के बेतवा के किनारे स्थित ऐतिहासिक स्थान एरच से लगभग सात पीढ़ी पूर्व दतिया आए थे। आपकी एम.ए. तक की शिक्षा दतिया महाविद्यालय में हुई। बाद में लायब्रेरी साइंस की डिग्री ग्वालियर एम.एल.बी. से प्राप्त की और उसके बाद इतिहास में पी.एच.-डी. की उपाधि बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से देश के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. भगवानदास गुप्त के निर्देशन में सन् 1982 में प्राप्त की।

आपको लिखने पढ़ने को शौक प्रारंभ से था, आप सन् 1962 से कविताएं लिखने लगे थे और मंचों जाकर उनका वाचन भी लगातार करते थे। उस समय आपका नाम "बाल कवि राम" था। यह नाम आपको देश के प्रसिद्ध कवि स्वर्गीय वासुदेव गोस्वामी द्वारा दिया हुआ था। कविता लिखने की प्रेरणा श्री गोस्वामीजी से ही आपको मिली थी, और आपका एक कहानी संग्रह "समझे लायब्रेरियन" नाम से प्रकाशित है।

इतिहास में शोध की प्रवृत्ति के जनक आपके शोध निदेशक डॉ. भगवानदास गुप्त थे। बाद में इस शोध की प्रवृति को प्रोत्साहन महाराज कुमार रघुवीर सिंह एवं उनके द्वारा स्थापित, श्री नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ और वहीं के डॉ. मनोहरसिंह राणावत द्वारा मिला। सन् 1980 से लगातार आपने इतिहास के शोध-पत्रों का वाचन विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, संस्थानों में लगातार किया है। इन शोध-पत्रों की संख्या साठ से अधिक हैं। सन् 2008 में आपको 1857 पर काम करने के लिए स्वराज संस्थान भोपाल द्वारा जिला स्तरीय फैलोशिप प्रदान की गई थी, विभिन्न संस्थानों में लायब्रेरियन के रूप कार्य करते हुए आप अक्टूबर 2010 में जिला पुस्तकालय दतिया से सेवानिवृत्त हुऐ हैं। प्रस्तुत पुस्तक, "बुन्देलखण्ड के परमार" आपके दस वर्ष से भी अधिक समय से शोध का निष्कर्ष है।